ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 197-199
www.allresearchjournal.com
Received: 11-07-2020
Accepted: 14-08-2020

डॉ॰ राम प्रकाश
पूर्व शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग,
ल॰ना॰मि॰वि॰ दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ॰ राम प्रकाश
पूर्व शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग,
ल॰ना॰मि॰वि॰ दरभंगा, बिहार, भारत

कृषि एवं रेलवे के विकास में लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग का आर्थिक महत्त्व

डॉ॰ राम प्रकाश

सारांश
ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस्पात का उत्पादन आज से लगभग 6000 वर्ष पहले से होता रहा है। विश्व का भारत ही एक ऐसा देश है जो सबसे पहले इस्पात का उपयोग किया। ऐतिहासिक अध्ययन से पता चलता है कि सिकन्दर महान के आक्रमण के समय फारस के बादशाह ने भारत से भालों का आयात किया था। हमारे देश की चमकती हुई तलवारों ने झेलम नदी के किनारे सिकन्दर की सेना से लोहा लिया था। विश्व प्रसिद्ध अशोक की लाट आज भी इन्जीनियरों के लिए कौतुहल और आश्चर्य का विषय है। ये सब तथ्य उस समय के हैं जबकि आज प्रगतिशील कहे जाने वाले राष्ट्र असभ्यों की गिनती में गिने जाते थे। प्रारंभ में सब कठिनाईयों का सामना करते हुए हमारे देश के महान उद्योगपति श्री जमशेदजी टाटा ने सन् 1907 में टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी की स्थापना की। सन् 1914–18 में हीरापुर में इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी बनी। सन् 1937 में बंगाल स्टील कारपोरेशन की स्थापना हुई। इसके अलावे बंगाल के आस–पास कुछ और छोटे उद्योग की स्थापना की गई।

प्रस्तावनाः
इस्पात भौतिक सभ्यता के ढ़ाँचे की रीढ़ है। आधुनिक सभ्यता के लिए इस्पात हवा और जल से भी अधिक उपयोगी है। नित्य प्रति जीवन की ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो या तो इस्पात से नहीं बनी हो। कवि बैरन ने तो यहाँ तक कहा है कि "सोना महल की रानी के लिए आवश्यक हैं, चाँदी महल की दासी के लिए, ताँबा एक साधारण कारीगर के लिए परन्तु लोहा एवं इस्पात इन सभी धातुओं का स्वामी है।" निःसंदेह आधारभूत उद्योगों में सबसे महत्वपूर्ण उद्योग इस्पात उद्योग है। यह न केवल औद्योगिक ढ़ाँचे की आधारशिला है, बल्कि आधुनिक युग के प्रत्येक क्षेत्र की आधारशिला है। इसे प्रत्येक क्षेत्र की आधारशिला इसलिए कहा जाता है कि अन्य उद्योगों का विकास इसी उद्योग पर निर्भर करता है। औद्यौगिक विकास के लिए मशीनों एवं बड़े–बड़े यंत्रों की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्त्ति इस्पात उद्योग की सहायता से की जाती है। राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यापार, परिवहन एवं संवाद वाहन के साधन, वैज्ञानिक कृषि सभी का भविष्य इस उद्योग के भविष्य पर निर्भर करता है। इस उद्योग की महत्त्व को स्वीकार करते हुए लार्ड किन्स ने कहा है कि "जर्मन साम्राज्य की नींव खून पर नही बल्कि लोहे एवं इस्पात और कोयले पर पड़ी थी।"
उपरोक्त विद्वानों द्वारा कही गई बातों से स्पष्ट होता है कि भारत में सबसे ज्यादा महत्त्व लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग का रहा है। आज बड़े ही दुख की बात है कि लोक क्षेत्र से ज्यादा महत्त्व निजी क्षेत्र के उद्योग को देने की बात कही जा रही है। अगर हम सही दृष्टिकोण से दोनों प्रकार के उद्योग पर विचार करें तो पायेंगे कि निजी क्षेत्र की तुलना में लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग का महत्त्व प्राचीन काल में था, आज भी है और आने वाले समय में भी रहेगा।
भारत का विकास कृषि के विकास पर निर्भर करता है। यह विभिन्न उद्योगों के लिए कच्ची सामग्री उपलब्ध कराती है। यही कारण है कि आज कृषि के विकास में नवीन प्रौद्योगिकी के प्रवेश के साथ ही कृषि यंत्रीकरण के कार्य में तेजी आना प्रारंभ हो गया है। आज कृषि में लोक क्षेत्र द्वारा उत्पादित इस्पात के बने विभिन्न प्रकार के यंत्रों का उपयोग किया जा रहा है। जैसे–ट्रेक्टर, तेल इंजन, दवा छिड़कने वाला मशीन इत्यादि। कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत जो हरित क्रान्ति लाई गई, उसमें पूर्ण रूपेन योगदान आधार रूप में इस्पात उद्योग का है। सिंचाई की व्यवस्था के लिए जो मशीन इस्तेमाल किए जाते हैं वह इस्पात का बना होता है। कृषि उपज बढ़ाने के लिए आज जो नए खाद बीज एवं रासायनिक दवाई का इस्तेमाल होता है वह भी किसी न किसी रूप मे इस्पात उद्योग के सहयोग से ही विभिन्न मशीनों के माध्यम से सस्ते दर पर कृषि क्षेत्र के नए–नए उपकरण वास्ते लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग द्वारा उपलब्ध नहीं कराए गए होते तो जो विकास हम कृषि का देख रहे हैं

वह नहीं मिलता।

मशीनों के प्रयोग से खेती में श्रम की बचत हुई है जिसका प्रयोग अन्य क्षेत्रों में किया जा रहा है। पहले जिस काम को मनुष्य हाथों के द्वारा करते थे, उसी काम को आज मशीनों द्वारा किया जा रहा है। इससे प्रति श्रमिक उत्पादकता में वृद्धि हुई है। उत्पादकता में वृद्धि होने से लागत में कमी आई है। लोगों को सस्ते दर पर कृषि क्षेत्र के उत्पादित वस्तु मिल रहे हैं। अनाज और दवा के बढ़ते मूल्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति अनाज के बगैर नहीं मरेगा लेकिन दवा के बगैर मर सकता है। अतः आज भारत की ऐसी स्थिति है कि यह विदेशों में भी अनाज का निर्यात कर रहा है।

खेती में मशीनों के प्रयोग से किसान की आमदनी बढ़ी है। जाहिर है कि ऐसा इसलिए होता है कि खेती में मशीनों के रूप में पूँजी का ज्यादा निवेश होता है। अक्सर देखा गया है कि जब खेती हल, बैल और दूसर परम्परागत साधनों के द्वारा की जाती थी तब तक वह महज जीवन निर्वाह का साधन होती थी और कृषि का पर्याप्त विकास नहीं हुआ था। यह बात दूसरी है कि परम्परागत खेती मे भी किसान उत्पाद का एक हिस्सा बाजार में बेचते थे। जब खेतों में ट्रेक्टर, सिंचाई के पम्प, थ्रैसर आदि मशीनों का इस्तेमाल होने लगा तो खेती का वाणिज्यीकरण हो गया है। इस स्थिति में किसान बाजार की कीमत प्रवृतियों को देखकर उत्पादन और निवेश सम्बन्धी निर्णय ले रहे है। यही कारण है कि बिहार के समस्तीपुर, बेगूसराय आदि जिलों में किसान राजमा, अजवाइन, सौफ, मेथी आदि का खेती वृहत पैमाने पर करने लगे है। ऐसे फसल से किसानों की आमदनी में वृद्धि हुई है। आमदनी में वृद्धि होने से आर्थिक अधिशेष में वृद्धि होती है। यह बढ़ता हुआ अधिशेष इतना होता है कि उससे न केवल खेती का और अधिक विकास होता है बल्कि उसका इस्तेमाल बुनियादी आर्थिक ढ़ाँचे के निर्माण या औद्योगिकरण के लिए भी किया जा रहा है। आज बहुत सारे ऐसे किसान हैं जिनके दरवाजे पर खादी–ग्रामोद्योग चल रहा है।

कृषि यंत्रों के प्रयोग से कृषि कार्य में पशुओं की आवश्यकता बहुत ही कम पड़ रही है। उदाहरण के लिए यंत्रों से खेती की अच्छी जुताई होती, सिंचाई के लिए पानी निकालने का काम किया जाता है आदि। अतः इन सभी कार्यो के लिए पशुओं की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है जिससे इन्हें रखने में बचत होती है। परिणामस्वरूप किसानों की आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी हो पाई है।

यंत्रीकरण के परिणामस्वरूप किसान भारी तथा नीरस कार्यो से मुक्त हुए हैं, उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा उनका जीवन स्तर भी ऊँचा उठा है। आज अधिकांश किसानों के घर में टी॰वी॰, फ्रीज, कुलर आदि वस्तुएँ देखने को मिल रहा है। साथ ही, इस्पात से निर्मित वस्तु जैसे–कप, ट्रे, बर्त्तन रखने वाला स्टैण्ड आदि का भी उपभोग करने लगे है। इससे इस्पात की माँग में वृद्धि हुई है।

बंजर भूमि को तोड़कर कृषि योग्य बनाने, सड़कों, नालियों तथा नहरों आदि के निर्माण में भी मशीनों का प्रयोग किया जा रहा है। कृषि के यंत्रीकरण से अपेक्षाकृत कम ही पशु–शक्ति की आवश्यकता होती है। इससे उनके भोजन की व्यवस्था के उद्देश्य से जो भूमि चारा की खेती में लगी रहती है वह कम हो जायेगी और उसका उपयोग खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक कृषि फसलों के लिए किया जायेगा। फलतः उनका उत्पादन और बढ़ सकता है।

भारत में विद्यमान आर्थिक स्थितियों के संदर्भ में महात्मा गाँधी का यह कथन बिल्कुल सही है कि "संत्रीकरण अच्छा है यदि संपादित किए जाने वाले कार्यो के लिए व्यक्ति अत्यन्त कम हो। यह एक बुराई है जब कार्य के लिए आवश्यकता से अधिक व्यक्ति हों जैसा कि भारत में स्थिति है।"

गाँधीजी के उपरोक्त कथनों के बावजूद भी भारत में मशीनों का प्रयोग किया गया है। जिसके परिणामस्वरूप कृषि का इतना विकास हो पाया है। साथ ही, इससे सम्बन्धित अन्य उद्योगों का भी विकास हुआ है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस्पात उद्योग के कारण ही कृषि का समुचित विकास हुआ है। आर्थिक महत्त्व के दृष्टिकोण से लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग का कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है।

लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग का आर्थिक महत्त्व रेलवे में भी देखने को मिलता है। रेलवे में दुर्गापुर इस्पात उद्योग एवं अन्य लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग द्वारा उत्पादित अधिकाधिक इस्पात का उपयोग रेलवे के संयंत्रों में होता है। भारत सरकार का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र रेलवे है। रेल–पथ शीघ्रगामी होता है और भारी वस्तुओं को दूर–दूर तक शीघ्रतापूर्वक पहुँचाने का अभी तक यह एक मात्र साधन है। जल परिवहन को छोड़कर रेल–पथ आवागमन का सबसे सस्ता साधन है। औद्योगिक तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से परिवहन का सबसे अधिक उपयोगी साधन सिद्ध होता है।

भारतीय रेल एक ही प्रबंध व्यवस्था के तहत दुनिया की सबसे बड़ी रेल प्रणाली है। इस प्रणाली को सुदृढ़ एवं विस्तृत करने में लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योगों के द्वारा बड़ी–बड़ी रेल की पटरियों का भी उत्पादन किया जा रहा है। भारत का रेल एशिया में एक नम्बर पर है। भारतीय रेल लाइनों की कुल लम्बाई 63,465 रूट कि॰मी॰ से ज्यादा है। 1951 में 53,596 रूट कि॰मी॰ से रेल लाईन थी, जिसमें 24,185 बड़ी लाईन थी, बाँकी मीटर लाईन। अब मीटर लाइन केवल 10,621 कि॰मी॰ बची है, जिसे पाँच सालों में बड़ी लाइन में बदल देने की आशा है। भारतीय रेलों के पास कुल 4.72 लाख माल डिब्बे, 48,597 सवारी डिब्बे और 8,153 रेल ईजन है। देश में 8,018 रेलवे स्टेशन है। रोज 18,317 रेलगाड़ी चल रही है जिसमें से 8,984 सवारी गाड़ी है जो 1.80 करोड़ लोगों को रोज ढ़ो रही है।

भारतीय रेल इस समय अपने विकास के सर्वोत्तम दौर से गुजर रही है। शायद यही वजह है कि लगातार पाँच बजटों में माल भाड़ा या किराया कम करने या स्थिर रखने के बाद भी उसका मुनाफा बढ़ रहा है। 2007–08 मे भारतीय रेल ने करीब 25,000 करोड़ रूपये का मुनाफा कमाया है। बीचे चार सालों में 68,788 करोड़ रूपये का लाभांश पूर्व लाभ अर्जित हुआ, जिसमें से करीब 39,215 करोड़ रूपये रेल परियोजनाओं पर खर्च किए गए। इसी तरह से भारतीय रेल परिचालन अनुपात सुधरकर 76ः हो गया। माली हालत को मतबूत करने के साथ भारतीय रेलवे बेहतर प्रबंधन से दुनिया की 500 शीर्ष कंपनियों के साथ तुलना की स्थिति में आ गई है और फण्ड बैलेंस 13,665 करोड़ रूपये से बढ़कर 20,483 करोड़ रूपये हो गया है। यह गति आगे के सालों में बरकरार रहे इस नाते ठोस दिशा तय करने के लिए रेल मंत्री ने अगले छः माह में विजन 2025 दस्तावेज भी तैयार करने की बात कही थी।

वर्तमान समय में रेल के बोगी निर्माण से लेकर स्टेशन तक इस्पात का उपयोग किया जा रहा है। जहाँ–जहाँ लोहा का पाइप था उसे हटाकर इस्पात का दिया जा रहा है क्योंकि यह ज्यादा टिकाऊ एवं सस्ता होता है। वर्तमान रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव ने इस्पात के उपयोग पर और भी जोर देते हुए कहा है कि एक्सप्रेस गाड़ियों के अलावे मेल एक्प्रेस गाड़ियों में भी स्टेनलेस इस्पात को कोचें का 2008–09 से उत्पादन शुरू किया जायेगा। इन प्रयासों से भारतीय रेलों को विश्वस्तरीय बनाने में मदद मिलेगी। साथ ही इस्पात उद्योगों का भी विकास होगा।

लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योगों द्वारा उत्पादित इस्पात का उपयोग रेल के साथ–साथ मेट्रो रेल में भी किया जा रहा है। मेट्रो रेल भारत में केवल कोलकाता में था लेकिन आज दिल्ली में भी बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। मेट्रो स्टेशन पर जाते ही जगह–जगह लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग द्वारा उत्पादित इस्पात की बनी चदरें

पाइपों आदि का उपयोग देखने को मिलता है। मेट्रो रेल के डब्बों में अधिकांश पार्ट इस्पात का बना हुआ है। आज दिल्ली में मेट्रो का जाल इन्द्रप्रस्थ से लेकर द्वारका सेक्टर–9 तक और रिठाला से लेकर दिलशाद गार्डन तक एवं विश्वविद्यालय से लेकर केन्द्रीय सचिवालय तक बिछा हुआ है। साथ ही इसका काम और भी तेजी से चल रहा है। मेट्रो से यात्रा करने पर समय की अधिकाधिक बचत हो रही है। इससे काम करने वाले व्यक्तियों एवं छात्रों को अधिकाधिक लाभ पहुँच रहा है।

निष्कर्षः

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि अर्थव्यवस्था के जितने भी क्षेत्र हैं, कमोवेश सभी क्षेत्रों में लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योग के इस्पात का उपयोग होने लगा है। ऐसी स्थिति में यदि सस्ते दर पर अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को इस्पात उपलब्ध कराये जाते हैं तो वैसी स्थिति में आर्थिक क्षेत्रों का विकास सन्तुलित रूप में संभव हो सकेगा, लेकिन यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि निजी क्षेत्र के इस्पात उद्योग सस्ते दर पर इस्पात की आपूर्ति इस लिए नहीं कर करते क्योंकि निजी उद्योग मुनाफा की दृष्टिकोण से चलाये जाते हैं जबकि लोक क्षेत्र के उद्योग मुनाफा के उद्देश्य से नहीं चलाये जाते हैं। अतः आर्थिक विकास को द्रुत गति प्रदान करने के लिए इस्पात उद्योग का विस्तार एवं विकास लोक क्षेत्र में हो, यह पहले से ज्यादा आवश्यक हो गया है। अतएव मेरा मानना है कि अगर श्रमिकों की भागीदारी निजी क्षेत्रों के साथ–साथ लोक क्षेत्र के इस्पात उद्योगों मे दृढ़ता के साथ लागू रखा जाता है तो वैसी स्थिति में आने वाले दिनों में इस उद्योग के विकास से भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास शीघ्र ही हो जायेगा।

सन्दर्भ सूचीः–

1. पल्ले, पी॰पी॰ – "भारत में आयरन एण्ड स्टील उत्पादन" अर्थशास्त्र, जनवरी 1923, पेज नं॰–60
2. जॉन सन, डब्लू डब्लू – भारत के इस्पात उद्योग, हावर्ड विश्वविद्यालय प्रेम कैंब्रिज 1969, पेज नं॰–14
3. भारत सरकार – सेल का वार्षिक रिपोर्ट–1985–86, पेज नं॰–30
4. मिश्रा एवं पूरी – भारतीय अर्थव्यवस्था–2002
5. भारत सरकार – योजना मार्च–2008, पेज नं॰–35 और 36
6. भारत सरकार – लोगों के जीवन में सार्थक बदलाव–2008, पेज नं॰–46
7. "इन्जीनियर फास्ट चैंजिंग इन डस्ट्रियल प्रोफाइल – द हिन्दु सर्वे ऑफ इण्डियन– इनडस्ट्रि–2000, पेज नं॰–323
8. सेल, नई दिल्ली – वार्षिक रिपोर्ट–2006–07
9. मिश्रा जे॰पी॰ – अर्थशास्त्र, साहित्य भवन, हॉस्पिटल समबन्ध रोड, आगरा, 282003, 2006.
10. मोहंती बी॰ – इंटरप्राइज एण्ड इमप्लाय्मेंट इन इंडस्ट्रि, न्यू सेन्चुरि पब्लिकेशन्स अनसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, 1996